रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –8 ● कानपुर 16 से 30 अप्रैल 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

24 अप्रैल, 2017 को

स्थापना दिवस पर घोषित होगा G.E.H.S.कोर्स

- ✓ नये कोर्स की होगी घोषणा
- ✓ मानकों के अनुरूप हैं कोर्स
- ✓ मान्यता में सहायक होगा कोर्स
- ✓ 1998 के बाद के चिकित्सक भी ले सकेंगे प्रवेश
- ✓ M.D.E.H. के स्थान पर P.G.E.H.

कई महीनों से प्रतीक्षित प्रतीक्षा अब समाप्त होने को है, इस 24 अप्रैल, 2017 दिन सोमवार को बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 अपने स्थापना के 43 वें वर्ष में दो नये कोर्सों की घोषणा करेगा। बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो मेडिसिन, उ0प्र0 की प्रबन्ध समिति लगातार इस बात के लिए प्रयासशील है कि इलेक्ट्रो होम्यो पैथी का उन्नयन हो और इस उन्नयन के रास्ते में जो भी बाधायें हैं उनको दूर करने का प्रयास किया जाये और इसमें बोर्ड को सफ़लता भी मिल रही है। शासनादेश जारी होने के बाद से ही बोर्ड का यह प्रयास था कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वह स्थान प्राप्त हो जिस स्थान के लिए वर्षों से हम सब संघर्षरत हैं परन्तु नियमितीकरण एक ऐसा विषय होता है जिसे पूरा करने के लिए हमें भी कुछ मापदण्ड पूरे करने होते हैं जब शासन से लगातार इस सम्बन्ध में पत्र व्यवहार किया गया तो एक बात निकल कर आयी कि वर्तमान में जितने भी पाठ्यक्रम प्रदेश या देश में संचालित हो रहे हैं उनका स्तर मान्यता के स्तर से बहुत कम है अस्तु यदि मान्यता पानीहै तो पाठ्यक्रम का उच्चीकरण होना बहुत आवश्यक है। पाठ्यक्रम में क्या और कितना परिवर्तन किया जाये ? इस सन्दर्भ में लगातार प्रदेश के चिकित्सा शिक्षा विभाग से पत्र व्यवहार कर सम्पर्क किया गया, कई महीनों के प्रयास के बाद यह जानकारी उपलब्ध हुई कि जो पाठ्यक्रम वर्तमान में संचालित किया जा रहा है उसकी अवधि और उसका स्तर परिवर्तन की मांग करता है, इस परिवर्तन को पूरा करने के लिए बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने विभिन्न चिकित्सा विधा के विशेषज्ञों की एक उच्च स्तरीय समिति बनायी, तद्नुरूप कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ लगभग 5 महीनों तक अनवरत कार्य के बाद यह नया कोर्स स्वरूप में आया विभिन्न संवैधानिक पहलुओं पर विचार करने के बाद इस कोर्स का नाम G.E.H.S. रखा गया इस कोर्स को ग्रेजुएट इन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक सिस्टम की शब्दावली प्रदान की गयी है, इस कोर्स की अवधि 4 +1 है अर्थात 4 वर्षीय शिक्षण के उपरान्त किसी P.S.C., C.S.C. या इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सालय में एक वर्षीय प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा इस कोर्स में प्रवेश की शैक्षिणिक योग्यता इण्टरसीडिएट बायोलॉजी या समकक्ष रखी गयी है इस वर्ष जुलाई से यह कोर्स नियमित रूप से प्रारम्भ हो जायेगा प्रारम्भ के दो वर्षों में जिन चिकित्सकों ने 1998 के बाद एम0बी0ई0एच0 कोर्स किया है वे भी अन्तिम वर्ष में प्रवेश हेतु अर्ह होंगे। बहुत दिनों से एम0डी0ई0एच0 कोर्स की मांग चल रही थी परन्तु M.D.E.H. के संचालन में बाध्यता होने के कारण नया कोर्स P.G.E.H. कोर्स प्रारम्भ किया जा रहा है इसकी अवधि दो वर्ष की है और कोई भी चिकित्सकीय योग्यताधारी स्नातक चिकित्सक इस कोर्स में प्रवेश ले सकता है । बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की प्रबन्ध कमेटी ने निर्णय लिया है कि इन कोर्सों का लोकार्पण 24 अप्रैल, 2017 को बोर्ड के स्थापना दिवस के अवसर पर हर जनपद पर स्थापना दिवस कार्यक्रम में किया जायेगा। इसकी सूचना हर जनपद में भेजी जा चुकी है। जो इलेक्ट्रो होम्यो पैथिक चिकित्सक इस कार्यक्रम में हिस्सा लेना चाहता है वह अपने जनपद के प्रभारी से सम्पर्क स्थापित करके समय व स्थान की सूचना प्राप्त कर ले वैसे तो प्रतिवर्ष बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 अपना स्थापना दिवस कार्यक्रम लखनऊ में धूम– धाम से मनाता है परन्तु इस वर्ष स्थापना दिवस के अवसर पर ही इन दो नये कोर्सों का लोकार्पण होना है अस्तु बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की प्रबन्ध समिति ने यह निर्णय लिया है कि इन कोर्सों का प्रदेश स्तर पर प्रचार हो सके और लोगों को अधिक से अधिक जानकारी मिल सके अस्तु जहां पर बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 से सम्बद्ध विद्यालय संचालित हो रहे हैं वहीं के संचालकों को निर्देशित किया गया है कि वह अपने स्तर से इस कार्यक्रम को आयोजित करें और अधिक से अधिक संख्या में चिकित्सकों को आमंत्रित करें जहां पर विद्यालय संचालित नहीं हो रहे हैं उन स्थानों पर स्टडी सेन्टरों के संचालकों को निर्देशित किया गया है कि वे अपने जनपद में इस कार्यक्रम को आयोजित कर लोगों को सूचित करें, शेष बचे हुए जनपदों में जनपद के वरिष्ठ चिकित्सक और इहमाई के प्रभारियों को निर्देशित किया गया है कि वह भी अपने अपने जनपद में स्थापना दिवस कार्यक्रम आयोजित कर इन कोर्सों की जानकारी लोगों को दें, यह कोर्स इलेक्ट्रोहोम्योपैथी के लिए बहुत उपयोगी हैं क्योंकि प्रदेश सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नियमितीकरण की दिशा में बड़ी तेज़ी से कार्य चल रहा है और बहुत सम्भव है कि आने वाले कुछ महीनों में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय भी ले लिये जायें अस्तु यह आवश्यक हो गया है कि जो यह नया कोर्स लाया गया है इसका अधिक से अधिक प्रचार हो जाये जिससे कि आने वाले दिनों में जब सरकार द्वारा कोर्स की समीक्षा की जाये तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी का यह कोर्स कसौटी पर खरा उतरे। एक तरफ़ भारत सरकार द्वारा 28 फरवरी, 2017 को एक नोटिस जारी कर सारे देश में प्रैक्टिस कर रहे चिकित्सकों, संचालित हो रहे विद्यालयों,औषधि निर्माण की इकाइयों व इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इतिहास एवं इस चिकित्सा विधा की उपयोगिता व ग्राहयता पर जानकारी मांगी है यह कार्य हम सबको करना है, यदि हमारा स्तर अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों की तुलना में कमतर पाया गया तो सरकार द्वारा गठित कमेटी कोई भी निर्णय ले सकती है अस्तु अच्छे निर्णय की अपेक्षा के साथ और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सुन्दर भविष्य के लिए हमें स्तरीय कार्य करने है।

अपने सभी पाठकों को स्थापना दिवस पर बहुत–बहुत बधाई।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0
अपने स्थापना के
43 वें वर्ष में
चिकित्सा शिक्षा विभाग के
मानकों के अनुरूप व मान्यता में सहायक
G.E.H.S.
(ग्रेजुएट इन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक सिस्टम)
अवधि : 4+1 वर्ष
व
P.G.E.H.
(पोस्ट ग्रेजुएट इन इलेक्ट्रो होम्योपैथी)
अवधि : 2 वर्षीय कोर्सों का
लोकार्पण
24 अप्रैल, 2017, दिन– सोमवार
को
अपने जनपद में आयोजित होने वाले
स्थापना दिवस कार्यक्रम में
सम्मिलित होकर
कार्यक्रम को सफ़ल बनावें।
निवेदक
*** Dr.M.H.Idrisi * Dr. Pramod Shanker Bajpai**
*** Dr. Shahina Idrisi**
*** Dr. Ateeq Ahmad * Dr.Mithlesh Kumar Mishra**

नोटिस से सब हुये बेचैन

28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार द्वारा वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों के नियमतिकरण के लिये एक नोटिस क्या जारी किया, पूरा का पूरा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक जगत बेचैन हो उठा।

यद्यपि उस नोटिस में ऐसा कुछ खास नहीं है जिससे कि परेशानी या बेचैनी पैदा हो, फिर भी लोग बेचैन हैं और परेशान भी हैं, लोगों की सबसे बड़ी परेशानी यह है कि हमारा कोई भी साथी इस नोटिस का भाव समझना नहीं चाहता है एवं यही नासमझी परेशानी का कारण बनती जा रही है जबकि इस नोटिस के माध्यम से भारत सरकार मात्र आपके कार्यों के बारे में व आपके इतिहास के बारे में आपके द्वारा जानकारी चाहती है, इस नोटिस के आने से न तो मान्यता मिलने जा रही है और न ही कोई नई समस्या जन्म लेने जा रही है परन्तु यदि हमने जल्दबाज़ी दिखायी और बिना सोचे–समझे पत्र व्यवहार कर लिया तो निसंदेह आप कष्ट को आमंत्रित कर सकते हैं यह 25 नवम्बर, 2003 का पुनर्व्यवहार भी हो सकता है।

आपको याद होगा कि वर्ष 2003 में भी भारत सरकार ने एक पत्र जारी कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता से सम्बन्धित सरकार द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट जब सार्वजनिक की थी तब भी हर तरफ हाहाकार मच गया था बन्दी का आदेश न होने के उपरान्त भी पूरे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक जगत में अघोषित बन्दी हो गयी थी और लगभग सात साल की लम्बी चुप्पी के बाद 5–5–2010 को जब भारत सरकार ने स्पष्टीकरण जारी किया तब कहीं जाकर स्थिति सामान्य हुई थी तब भी भारत सरकार ने कोई गलत आदेश नहीं दिया था और इस बार भी कोई गलत आदेश नहीं जारी किया है।

हमें अपनी समझ में पैनापन लाना होगा और गम्भीरता के साथ नोटिस की एक एक पंक्ति का अनुशीलन करना होगा तदोपरान्त ही कोई निर्णय लेना होगा। पहली बात तो यह नोटिस न तो मान्यता दे रही है और न ही मान्यता छीन रही है अपितु नोटिस के सहारे सरकार एक बार फिर आपसे जानना चाहती है कि जो लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की मांग कर रहे हैं उन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में क्या कार्य किया है और उन कार्यों का आमजन ने कितना लाभ उठाया है ?इस तरह से सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपादेयता व ग्राहता जानना चाहती है, ऐसा नहीं है कि भारत सरकार के पास इसकी जानकारी नहीं है ,भारत सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में सबकुछ जानती है परन्तु फिर भी सरकार चाहती है कि जो लोग भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में लगे हैं वे अपने अपने कार्यों का विवरण व्यक्तिगत रूप से या एकत्रित रूप में सरकार को प्रस्तुत करें और इस कार्य के लिए सरकार ने प्रत्येक तिमाही का समय निश्चित किया है। यथा 30 मार्च , 30 जून, 30 सितम्बर, 30 दिसम्बर चूंकि तिथियां और माह तो लिखा है परन्तु वर्ष का उल्लेख कही नहीं किया गया है।

हो सकता है सरकार की यह इच्छा हो कि आगे भी इस तरह की जानकारी सरकार द्वारा एकत्रित की जाती रहे, यद्यपि नोटिस का आखिरी पैरा यह बताता है कि सरकार द्वारा जो निर्णय लिया जायेगा उसपर पुनर्विचार नहीं किया जायेगा। यह बात गलत है, बहुत सम्भव है कि पहली बार में सरकार के पास वह सारी जानकारी उपलब्ध न हो पाये जिनके बारे में सरकार अपेक्षा रखती है, अब सारा का सारा दायित्व इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संस्था संचालकों का है कि वह किस ढंग से सरकार के पास अपना पक्ष रखते हैं ! जब से यह नोटिस आयी है तब से इलेक्ट्रो होम्योपैथी दो धड़ों में बंटी नज़र आ रही है , एक वह धड़ा है जो सन् 1953 से लेकर आज तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को चला रहे हैं, दूसरा वह धड़ा है जो 2010 के बाद से एकदम से सक्रिय हो गया है और इसी धड़े ने गुज़रे सात सालों के अन्दर पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन में कुछ नई नई विचार धारायें जोड़ी हैं और एक तरह से पुराने आन्दोलनकारियों को अलग थलग करने का प्रयास किया है, इसका परिणाम यह हुआ है कि आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी का एक धड़ा महाराष्ट्र व गुजरात पर आश्रित है वहीं दूसरा धड़ा यू0पी0 व बिहार की कमान संभाले है जबकि यह सत्य है कि केन्द्र का रास्ता उत्तर प्रदेश व बिहार से ही होकर जाता है। इसलिए न बेचैनी होनी चाहिये और न ही परेशानी।

शौर्य दिखाने का खुला अवसर

सपने देखना सबको अच्छा लगता है और यदि सपने रंगीन हों तो कहना ही क्या ! सपनों की दुनिया का रंग अलग होता है सपनों में होना, सपनों में रहना, सपनों का हसीन होना यह सपनों की विचित्र दुनिया है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सपनों से बहुत बड़ा सम्बन्ध है सपनों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी शुरू होती है और जब तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जुड़े रहते हैं तब तक स्वप्नलोक में विचरण करते रहते हैं। हर माता पिता यह चाहता है कि उसके द्वारा पोषित बालक या बालिका समाज में सम्मानजनक अपना स्थान बनाये समान्यतयः हर माता पिता का यह स्वप्न है कि उसका पाल्य डाक्टर या इंजीनियर बने इसके लिए वह प्रयास भी करता है, सफल हो जाये तो अच्छी बात है, हमारे भारत वर्ष में यह आम बात है कि जो एलोपैथी का चिकित्सक बने वही डाक्टर है बाकी सब वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक हैं अन्य देशों की बात अलग है जहाँ बालक या बालिका अपनी क्षमता व इच्छा अनुसार अपने जीवन यापन के व्यवसाय का चयन करता है और उसी में सफल होकर श्रेष्ठता का प्रदर्शन करता है परन्तु भारतवर्ष में अभी भी अभिभावक की मर्ज़ी से ही व्यवसाय का चयन होता है। बालक या बालिका में प्रतिस्पर्धा पार करने की क्षमता हो या न हो पर माता पिता यही चाहता है कि उसका पाल्य उसकी इच्छा का सम्मान करे और जो वह चाहता है उसी क्षेत्र में जाये। जब नीट की परीक्षा पास नहीं कर पाता तब माता पिता अपने सपनों को पूरा करने के लिए अपने पाल्य का प्रवेश इलेक्ट्रो होम्योपैथी में करा देता है और यहीं से शुरू होती है सपनों की रंगीन दुनियाँ, माता पिता सपना देखते हैं कि उसका पाल्य चिकित्सक बन जायेगा और जो सपना पूरा करने वाला है बालक या बालिका वह अपने भविष्य के रंगीन सपने देखने लगता है कि तीन या चार वर्ष के बाद वह डाक्टर बनकर निकलेगा समाज में सम्मान अर्जित करेगा, प्रवेश लेते ही उसके सपनों में पंख लग जाते हैं वह स्वर्णिम भविष्य की अच्छी कल्पनाओं में खो जाता है, वह मन ही मन इतना प्रसन्न होता है कि अब वह अपनी सारी इच्छायें पूरी कर लेगा, आवश्यकताओं की वस्तुओं के साथ–साथ सुविधाभोगी वस्तुयें भी अपने लिए अर्जित कर लेगा, लेकिन धीरे–धीरे जैसे–जैसे समय बीतता है तब वह मान्यता के सपनों में खो जाता है। यह तो अच्छी बात है कि कुछ लोग यह स्पष्ट बता देते हैं कि अभी इस पद्धति को मान्यता नहीं मिली है, कुछ ऐसे भी होते हैं जो पता नहीं क्या–क्या कह देते हैं ! और इसी क्या–क्या की उधेड़बुन में नव प्रवेशी जो पुराना हो चुका होता है काफी कुछ सपने देख चुका होता है आन्दोलन की राह पर चलता है रोज़ नई कल्पनायें बनती बिगड़ती हैं और इसी कल्पना लोक में विचरण करते हुए वह अपना कोर्स तक पूरा कर लेता है, अब उसके सामने दायित्व होता है कि वह अपने भविष्य का निर्माण कैसे करे इसी भविष्य के निर्माण के लिए वह सबकुछ कर देता है जो उसे नहीं करना चाहिये चिकित्सकीय चकाचौंध में फंसकर बहुत कुछ जल्दी जल्दी पाने की अपेक्षा में उसका रुझान एलोपैथी की तरफ हो जाता है। उसके इस रूझान से उसका तो भला हो जाता है परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भला नहीं हो पाता। इलेक्ट्रो होम्योपैथी के भले के लिए आवश्यकता है कि अधिक से अधिक संख्या में हमारे चिकित्सक अपनी ही विधा से चिकित्सा व्यवसाय करें और रोगियों को स्वस्थ्यता प्रदान करें इससे चिकित्सक को आत्म – संतुष्टि का अनुभव होता है और वह अपनी पूरी क्षमता से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का समर्थक भी हो जाता है किसी एक चिकित्सक की प्रगति को देखकर उसके साथियों को भी यह प्रेरणा मिलती है कि वह भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के शुद्ध चिकित्सक बने।

अपनी–अपनी विधा को अपनाकर भी सपने पूरे किये जा सकते हैं यह आवश्यक नही है कि सपनों को पूरा करने के लिए हम दूसरों के कन्धों का सहारा लें क्योंकि इस सत्य को हमें कभी नहीं भूलना चाहिये कि दूसरा कन्धा कितना भी मज़बूत क्यों न हो लेकिन वह जीवन भर का सहारा नहीं होता है, आज के परिदृश्य में जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति बड़ी तेज़ी के साथ प्रगति के रास्ते पर चल रही है जिस शासकीय संरक्षण की हम वर्षों से बाँट जोह रहे हैं, धीरे–धीरे हमारी वह इंतज़ार करने की सीमा समाप्त होने जा रही है केन्द्र सरकार व प्रदेश सरकार द्वारा जो सकारात्मक रूख इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए दिखाया जा रहा है वह हमारी आशाओं को बल प्रदान करने वाला है। यह निर्विवाद सत्य है कि आगे बढ़ने के लिए कुछ सपने देखे जाते हैं और उन सपनों को पूरा करने के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं और इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति निरन्तर प्रयास करता है कुछ भाग्यशाली व्यक्ति होते हैं जो प्रथम प्रयास में ही लक्ष्य भेद लेते हैं और कुछ ऐसे भी होते हैं जिन्हें लक्ष्य पाने के लिए बार–बार प्रयास करने पड़ते हैं और यदि आदमी प्रयास करे तो सफलता प्राप्त होती ही है जब सफलता नहीं मिलती है तो हमें अवसर भी मिलता है कि हम अपनी विफलता का विश्लेषण करें और जो कमियां प्राप्त हों उन्हें दूर करने का प्रयास करें बहुत सम्भव है कि इस मार्ग में चलते हुए हमारे सपनों को कुछ देर के लिए ठहरना भी पड़े लेकिन यह ठहराव ज़्यादा लम्बा नहीं होता है यदि हमें अपने सपनों को पूरा करना है तो निश्चित रूप से हमें भी भावनात्मक रूप से, मानसिक रूप से मज़बूत व परिपक्व भी होना पड़ेगा।

समय की गति निरन्तर आगे बढ़ रही है, समय जितना व्यतीत होता जायेगा परिस्पर्धा उतनी ही कठिन होती जायेगी क्योंकि जो प्रचलित चिकित्सा पद्धतियां हैं वहां काम भी हो रहा है, शोध भी हो रहे हैं, सरकारी सहयोग व समर्थन भी मिल रहा है, उनके कार्यों का मूल्यांकन भी हो रहा है परन्तु हम इलेक्ट्रो होम्योपैथों को इन सारी व्यवस्थाओं को पार करना है काम भी बहुत करना है शोध के रास्ते ढूंढने हैं, सरकारी सहयोग व समर्थन तो मिल रहा है लेकिन हम उसका उपयोग भी नहीं कर पा रहे हैं और जो कार्य हो रहा है उसका वास्तविक मूल्यांकन नहीं हो रहा है परिणामतः हमारे कार्यों में सुधार नहीं हो पा रहा है एक ही ढर्रे पर चलते रहने का समय कब का गुज़र चुका है नित्य नये हो रहे प्रयोगों के मध्य यदि हमें अपनी उपस्थिति रखनी है तो समान्तर तो नहीं परन्तु लगभग कार्य तो करने ही होंगे, साधनों का अभाव नहीं है हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रतिभाओं की कमी नहीं है सिर्फ आवश्यकता है मनोबल के बढ़ाने की, मात्र सपने देखने से काम नहीं चलता सपनों को पूरा करने के लिए अवसर भी हमें ही तलाशने हैं और इन अवसरों को सही उपयोग करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति को मज़बूत करना है जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मज़बूत होने की बात होती है तो हमारे साथी ही कहने लगते हैं कि क्यों सपने दिखा रहे हो जबकि तथ्य यह है कि जो सपना देखता है वही आगे बढ़ता है, अपने आस पास मात्र सपनों के जाल बिछाने से काम नहीं चलता काम चलाने के लिए काम करना पड़ता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता या नियमितीकरण दोनों ही स्थिति में सरकार आपके कार्यों को देखेगी और कार्य भी ऐसे हों जिनका कोई प्रतिकूल प्रभाव न हो, सेफ होना दवाओं की गुणवत्ता दर्शाती है और यही गुणवत्ता हमारी प्रमाणिकता है जब रोगी हमारी दवाओं से ठीक होंगे और रोग मुक्त होंगे तो रोगी स्वयं मुक्तकंठ से आपकी और आपकी पद्धति की प्रशंसा करेंगे प्रशंसा के लिए हर वह उपाय हमें करने है जो हमारे बस में है सरकार की नीतियों में बदलाव तो सरकार लाती है। हमारे बस में इतना है कि हम अपने कार्य से सरकार को इतना प्रभावित कर दें कि सरकार हमारी योग्यता और प्रतिभा को देखकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अपनी स्वास्थ नीति में समाहित करने के लिए विवश हो जाये कहने में तो यह स्वप्न जैसी बात लगती है लेकिन अपने सपनों को धरातल पर यर्थाथ व मूर्तरूप हम और हमारे साथी ही देते हैं।

तो क्यों न हम काम करते हुए हर सपने को पूरा करें।

मैटी एक शोध का विषय

मैटी इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े हैं और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जन्मदाता मैटी ही हैं।

दोनों एक दूसरे के पूरक हैं ।।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को चलते हुए लगभग 150 वर्ष से ज़्यादा समय हो गया है और इन 150 वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति का काफ़ी विस्तार भी हुआ है, यूरोपियन देशों के साथ साथ एशिया और अमेरिका में भी इस चिकित्सा पद्धति ने अपने पाँव पसारे हैं, कुछ अरब और खाड़ी देशों में भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कुछ प्रतिनिधि मिल जाते हैं, परन्तु इस चिकित्सा पद्धति का सर्वाधिक विस्तार एशियायी देशों में ही हुआ है और इन देशों में इस चिकित्सा पद्धति का विस्तार इस लिये हुआ क्योंकि दुनिया में एशिया और मध्य एशिया के कुछ ऐसे देश हैं जो विकास के अभी प्रथम पायदान पर ही हैं, जबकि तुलनात्मक रूप से यूरोपियन देश विकसित और काफ़ी विस्तृत हैं इन देशों में पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति का ही बोल–बाला है और जिन जिन देशों में एलोपैथी की जड़ें ज़्यादा मज़बूत हैं वहां पर अन्य चिकित्सा पद्धतियों को विकास का उतना अवसर नहीं मिला जितना कि मिलना चाहिये और यही वह प्रमुख कारण है जिससे कि अन्य चिकित्सा पद्धतियां ज़्यादा लोकप्रिय नहीं हो पायीं। जहां तक भारत वर्ष की बात है यहाँ पर आयुर्वेद मूल चिकित्सा पद्धति के रूप में स्थापित रही है, चूंकि अखण्ड भारत व उससे जुड़े हुए अन्य राष्ट्र भी आयुर्वेद से प्रभावित हो रहे हैं, प्रमाण तो यह है कि पूरे आर्यावर्त में आयुर्वेद का एकछत्र राज्य रहा है। समय बदलता है परिस्थितियां बदलती हैं और इन्हीं परिवर्तनों के दौर पर व्यवस्थाओं में भी परिवर्तन होता है, जब व्यवस्थायें परिवर्तित होती हैं सत्ता में परिवर्तन हो ही जाता है और यह भी कटु सत्य है कि सत्ता का प्रभाव उस देश की शिक्षा व्यवस्था व चिकित्सा व्यवस्था पर पड़ता है।

धीरे धीरे राजशाही खत्म हुई और क्रमशः मुग़लों और अंग्रेज़ों ने सत्ता संभाली इसका परिणाम यह हुआ कि मुग़ल काल में युनानी चिकित्सा पद्धति को अपने पाँव पसारने का भरपूर अवसर प्राप्त हुआ परन्तु मुग़ल शासन पूरे विश्व में नहीं था फलतः युनानी चिकित्सा पद्धति का विश्वस्तर पर प्रसार नहीं हुआ है, जबकि अंग्रेज़ों ने पूरे विश्व में अपना साम्राज्य कायम किया और अंग्रेज़ों ने जिन जिन देशों में कब्ज़ा किया वहीं अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए वहाँ की संस्कृति पर प्रहार किया संस्कृति नष्ट करने के लिए वहाँ की शिक्षा और चिकित्सा व्यवस्था पर भरपूर प्रहार किया गया परिणाम स्वरूप वह अपनी छाप छोड़ने में सफ़ल हो गये जिसके कारण एलोपैथी चिकित्सा पद्धति को बढ़ने का भरपूर अवसर प्राप्त हुआ।

अंग्रेज़ों ने न केवल एलोपैथी को बढ़ावा दिया बल्कि सूझ–बूझ के साथ अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों का दमन भी किया, दमन के लिए उन्होंने एलोपैथी का भरपूर प्रचार व प्रसार किया, सरकारी खज़ानों का खुलकर एलोपैथी के प्रसार के लिए प्रयोग किया, एलोपैथी की तुलना में अन्य चिकित्सा पद्धतियों को शोध के पर्याप्त अवसर भी नहीं मिले और यही वह मुख्य कारण था कि अन्य पद्धतियां एलोपैथी की तुलना में कहीं भी बराबरी नहीं कर सकीं। चूंकि जर्मन का अंग्रेज़ों से अक्सर युद्ध होता रहता था इसलिए जर्मनी में नई–नई पद्धतियों को जन्म लेने का अवसर मिला, इसमें से कुछ पद्धतियां फलीफूलीं और कुछ जीवन के पहले ही समाप्त हो गयीं परन्तु होम्योपैथी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को विकास का अवसर मिला।

आज उसी का परिणाम है जोकि होम्योपैथी इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धतियों के रूप में स्थापित हो सकीं एक ओर होम्योपैथी का आविष्कार सैमुअल हैनीमैन द्वारा किया गया वहीं दूसरी ओर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जनक काउण्ट सीज़र मैटी रहे, मैटी का जन्म आज से 208 वर्ष पहले 1809 में इटली में हुआ था तब अन्य चिकित्सा पद्धतियां जो व्यवहार में लागी जा रही थीं उससे शायद मैटी प्रभावित नहीं थे, उनके मन में कहीं न कहीं यह चला करता था कि जो पद्धतियां वर्तमान में चलन में हैं वह रोग की जड़ तक प्रभाव नहीं डालती हैं जिसके कारण बीमारी बार–बार सर उठा लेती है, होम्योपैथी से भी उनका उतना लगाव नहीं था जितना प्रचारित किया जाता है, मैटी अक्सर कहते थे कि एक रोग पर एक औषधि कैसे लाभ कर सकती है ?जबकि किसी एक व्याधि के आने पर विभिन्न प्रकार के लक्षण प्रकट होते हैं।

इस तरह का अन्तरद्वन्द उनके मन में चला करता था वह पेड़ पौधे छोटी–छोटी पादपों पर पैनी नज़र रखते थे और पौधों पर हो रहे परिवर्तन पर गम्भीरता से विचार भी किया करते थे, घनाड्य परिवार से सम्बन्ध रखने के कारण उनके मन में कुछ नया करने की हर समय इच्छा बनी रहती थी और यही इच्छा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के रूप में प्रकट हुई जो किवदन्ती है कि कुत्ते का सम्बन्ध मैटी से बहुत है वह इस बात को प्रमाणित करता है कि मैटी छोटे से छोट जीव के शरीर में होने वाले परिवर्तनों को बड़ी गहराई से देखते थे, कुत्ते के बाल झड़े, खुजली हुई और शरीर का अंग व्रणयुक्त था मैटी उस जीव को प्रायः रोज़ देखते थे और उसके परिवर्तनों पर विचार करते थे कुत्ता उनके बगीचे में एक विशेष स्थान पर जाता था और वहां पर उगे पेड़ पौधे पर लोटा करता था।

धीरे धीरे उस कुत्ते के व्रण ठीक होने लगे, मैटी इस पूरी घटना पर तल्लीनता से दृष्टि रखे थे जब कुत्ते के शरीर पर परिवर्तन देखा और धीरे धीरे वह कुत्ता पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया, तब मैटी चिल्ला पड़े कि चमत्कार हो गया और इसी चमत्कार को जानने के लिए मैटी ने सघन अध्ययन प्रारम्भ किया था, विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन करने के बाद उन्होनें पाया कि प्रत्येक पौधे में वैद्युतीय शक्ति होती है जिसके कारण शरीर पर सकारात्मक प्रभाव डाला जा सकता है और यहीं से प्रारम्भ हुई इलेक्ट्रो होम्योपैथी के उत्पत्ति की कहानी।

आज हमारे कुछ नवजवान साथी जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य कर रहे हैं उनका मानना है कि मैटी शिक्षित ही नहीं थे और न मैटी में इतनी योग्यता थी कि वह किसी नई पद्धति की खोज करते ! हो सकता है हमारे उन साथियों ने कहीं इस तरह का साहित्य पढ़ लिया होगा और बिना उस पर अनुशीलन किये इस तरह की चर्चा सार्वजनिक रूप से करने लगे, हमारे जो साथी इस तरह की चर्चा करते हैं उन्हें थोड़ा सा अपने चिन्तन पर विचार करना चाहिये कि योग्यता को किसी प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं होती है। आज से 200 वर्ष से पूर्व जब मैटी का जन्म हुआ होगा तब उस समय शैक्षिक व्यवस्था क्या थी ?इस पर भी उन्हें नज़र डालनी चाहिये आज जो इतिहास मैटी के बारे में मिल रहा है वह अकल्पनीय है। जब भी किसी का इतिहास लिखा जाता है तो इतिहास कार का अपना दृष्टिकोण होता है किसी भी महापुरूष के जीवन के बारे में हर इतिहासकार अपनी अपनी दृष्टि से चित्रण करता है, हम किसी भी महापुरूष के बारे में लेलें तो हम यही पाते हैं कि सारे इतिहासकारों का मत एक सा नहीं होता है एक इतिहासकार जहाँ जिस कार्य को सही ठहराता है वहीं उसी कार्य को दूसरा इतिहासकार अनावश्यक ठहरा देता है इस तरह की भ्रान्तियां तो चलती ही रहती हैं परन्तु समाज व्यक्ति की अच्छाईयों को ग्राहय कर लेता है, ठीक इसी तरह मैटी क्या थे ?और क्या नहीं थे ?इसके बारे में ज़्यादा जानने से बेहतर है कि जनहित में मैटी ने जो नई उपलब्धि दी उसे हम स्वीकारें। जब हम मैटी के बारे में ज़्यादा अध्ययन करते हैं तो दो शब्द भी दिखायी देते हैं वह शब्द हैं क्वैकरी व फ्रेक। कुछ लोगों का मानना है कि मैटी क्वैकरी करते थे तत्काल परिस्थितियों में क्वैकरी का अर्थ इस समय के अर्थ से कुछ भिन्न रहा होगा, चूंकि होम्योपैथी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी परिस्थिति जन्य समान लगती हैं इसलिए उस समय लोगों ने उसे क्वैकरी का नाम दिया। हमें इन सब चीजों से ऊपर उठकर यह मानना है कि 200 वर्ष पहले मैटी थे, मैटी का साहित्य था, इलेक्ट्रो होम्योपैथी थी और यही हमारी पहचान है । सन् 1880 के आस पास फादर मुलर जो हैनीमैन के प्रशंसक व सहयोगी थे भारत वर्ष आये यहां पर शिक्षण कार्य किया और मैटी के विचारों को फैलाया, एक तरह से होम्योपैथी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में अपना साम्राज्य स्थापित किया यह वह सारे प्रमाण हैं जो हमें दिखायी देते हैं और इन प्रमाणों के लिए हमें किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

1952 तक दिल्ली के पहले स्वास्थ्य मंत्री डा0 युद्धवीर सिंह इटली की दवाईयों का प्रयोग करते थे और चिकित्सा करके रोगियों को रोगमुक्त करते थे यह आज़ादी के बाद का प्रमाण है। अब मैटी के बारे में हम जितना भी जानना चाहें वह सबकुछ मिल सकता है बशर्ते हमारी दृष्टि संकीर्ण न हो, मात्र किसी एक व्यक्ति के कह देने से कोई विधा खराब नहीं हो जाती है, फिर जिसकी जड़ें 200 वर्ष पुरानी हों उसमें कुछ न कुछ दम तो है ही।

इसी दम के कारण यह पद्धति निरन्तर आगे बढ़ती जा रही है किसी के बारे में कोई टिप्पणी करना बहुत आसान होता है परन्तु वहां तक पहुँचना कितना मुश्किल होता है ! मैटी के बारे में लोग तरह तरह की बातें करते हैं लोग कहते हैं कि मैटी डाक्टर नहीं थे, तो जितने भी वैज्ञानिक होते हैं वह सिर्फ शोध करते हैं अपने मन में कौंद रहे विचारों को अन्तिम स्थिति देने के बारे में प्रयास करते हैं। अब आप न्यूटन को ही ले लें न्यूटन ने जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया वह आज भी सर्वस्वीकार है अब कोई न्यूटन की योग्यता के बारे में टीका टिप्पणी करे यह कहाँ तक न्यायोचित है ! इसका निर्णय आप स्वयं ही कर सकते हैं। जिस मैटी की खोज पर लगातार 200 वर्षों तक भिन्न भिन्न देशों ने भिन्न भिन्न वैज्ञानिकों द्वारा कार्य किया जाता रहा, उस कार्य पर यदि हम कोई प्रश्न चिन्ह लगाते हैं तो वह तर्क संगत नहीं है, एलोपैथी का जन्म जब हुआ था उस समय क्या उसका स्वरूप इतना विराट था ? उत्तर में न ही मिलेगा। आवश्यकता के अनुसार विकास होता है समय की मांग और उपयोगिता परिवर्तन को जन्म देती है यही परिवर्तन विकास की गाथा कहते हैं। इलेक्ट्रो होम्योपैथी आज जिस पायदान पर है वह उसके विस्तार की कहानी स्वतः कह रही है।

जिन लोगों को मैटी के बारे में कोई सन्देह हो वह अपने स्तर से खुली दृष्टि से शोध करें निश्चित रूप से आप मैटी को जितना जानना चाहेंगे मैटी उससे कहीं आगे मिलेंगे।

आखिर लोग विचलित क्यों हैं ?

इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े लोगों को हर, साल दो साल में विचलित होने का अवसर प्राप्त होता रहता है।

कोई न कोई ऐसा कारण बन ही जाता है जब इससे जुड़े व्यक्ति विचलित होते रहते हैं विचलित होने का अपना एक इतिहास है कुछ आंकड़े आपके सामने प्रस्तुत हैं 1998 में जब दिल्ली हाईकोर्ट का आदेश आया और इस आदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कुछ निर्देश जारी किये गये, उनमें से कुछ निर्देश यह हैं जैसे डिग्री, में प्रतिबन्ध ! लोग इससे विचलित हो गये !! डाक्टर शब्द लिखने पर विचार लोग, इसपर विचलित हो गये !!! 25 नवम्बर, 2003 को भारत सरकार का आदेश आया लोग विचलित के साथ–साथ भयभीत भी हो गये, 5–5–2010 को स्पष्टीकरण आया लोग विचलित हो गये 21 जून, 2011 का आदेश आया लोग विचलित हो गये कि यह तो आदेश इहमाई वालों के लिए है हमारा क्या होगा ?इसलिए ज़्यादा विचलित हो गये। 4 जनवरी, 2012 को उत्तर प्रदेश सरकार ने बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के लिए शासनादेश जारी कर दिया आदेश उत्तर प्रदेश के लिए था विचलित पूरा देश हो गया कि अब यह तो उत्तर प्रदेश में एकाधिकार जमायेंगे। 2 सितम्बर, 2013 को महानिदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवायें उ0प्र0 ने समस्त अपर निदेशक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा समस्त मुख्य चिकित्सा अधिकारियों को पत्र लिखकर 4 जनवरी, 2012 को जारी शासनादेश के परिचालन का पत्र लिखा लोग विचलित हो गये 14 मार्च, 2016 को निदेशालय ने पत्र जारी किया लोग विचलित हो गये 03 अगस्त, 2016 को आयुष ने पंजीयन से सम्बन्धित पत्र जारी किया लोग विचलित हो गये अब 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग ने एक नोटिस क्या जारी किया पूरा देश विचलित है। तरह–तरह की कार्यवाहियां हो रही हैं, रोज़ बैठकों का दौर चल रहा है, मांगने और देने का सिलसिला जारी है, इसकी आड़ में कहीं–कहीं उगाही भी हो रही है, पूरे देश में ऐसी उहापोह मची है, जैसे कि कुछ अनिष्ट की आंशका है, सच बात तो यह है कि

जब तक जीवन है,
तब तक स्पंदन है
तभी तक विचलन।

लेकिन ज़्यादा विचलन ठीक नहीं होता है क्योंकि जब मन विचलित होता है तो इसका सीधा प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है जिससे कि कार्य प्रभावित होता है, सरकार द्वारा हमें जो कुछ भी मिलता है उसके पीछे कहीं न कहीं हम सब होते हैं पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने का पूरा अवसर है परन्तु हमें जो मिलता है हम उससे ज़्यादा पाना चाहते हैं इसलिए सरकार से इतना पत्र व्यवहार कर दिया कि सरकार को हिलना ही पड़ा, हमारी मांग लगातार यही रहती है कि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता प्रदान करे और इस मांग में हम यह भूल जाते हैं कि सरकार को मान्यता देने में अपने कुछ मापदण्ड होते हैं इन मापदण्डों को पूरा करने के बाद ही हम मान्यता का स्वाद चख सकते हैं। सरकार ने यह तो वादा नहीं किया कि मान्यता देंगे यह ज़रूर कह दिया कि सरकार एक अधिशासी आदेश पारित करेगी और इस आदेश को पाने के लिए सरकार ने एक नोटिस जारी किया इस नोटिस के माध्यम से सरकार ने पूरे देश की इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति जाननी चाही है सरकार को यह पता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में बहुत बड़ी मात्रा में लोग कार्य कर रहे हैं इसलिए सरकार ने अपेक्षा की है कि अच्छा होगा यदि अलग–अलग प्रतिवेदनों के स्थान पर एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाये और सरकार उस प्राप्त प्रतिवेदन पर विभिन्न कोणों से विचार करके इलेक्ट्रो होम्योपैथी की कोई दिशा तय कर सके।

इसलिए अब वह समय आ गया है कि जब हम अपने विवेक का प्रयोग करते हुए सरकार को उतनी ही जानकारी दें जिससे कि कार्य सिद्ध हो सके।

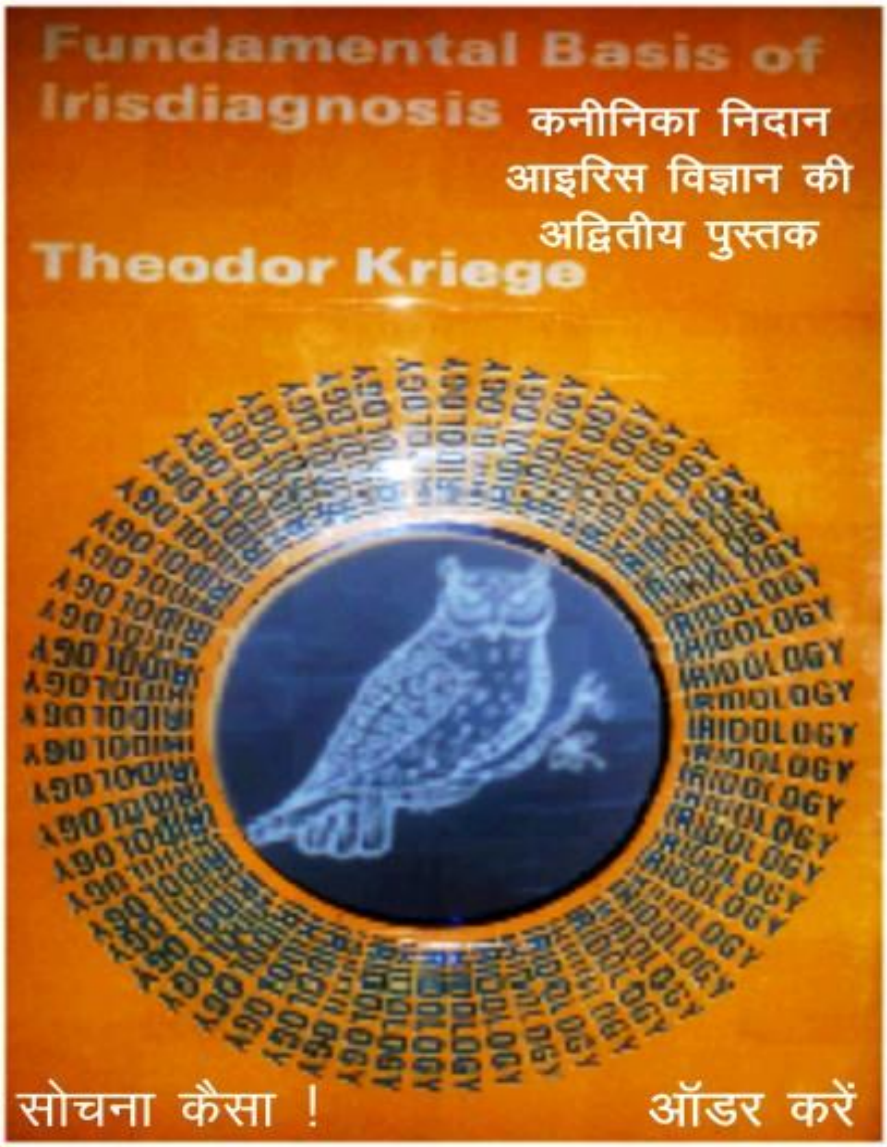

एक मात्र पुस्तक

Iris Diagnosis

136 Page

&

Price ₹40 only

डाक खर्च ₹ 20 अतिरिक्त

आपके लिये अब

ऑनलाइन बुकिंग

की भी सुविधा

अपना नाम, पूरा पता

डाक का पिनकोड

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक गाइडें

मटेरिया मेडिका ₹ 25

जनस्वास्थ्य विज्ञान ₹ 50

प्रैक्टिस ऑफ़ मेडिसिन ₹ 30

फार्मेसी ₹ 5 फ़िलॉसोफ़ी ₹ 30

पर S.M.S. कर सकते हैं

Conditions applied

सम्पर्क करें

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक केन्द्र

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0

127/204 एस जूही, कानपुर–208014

+91 9415074806, 9450153215, 9450791546, 9415486103